हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 23.11.2020 को 'हिंदी भाषा में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन' विषय पर आयोजित एक दिवसीय वेबिनार का वृतांत

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के सौजन्य से दिनांक 23.11.2020 को मध्याह्न 3:00बजे से 5:00 बजे तक ऑनलाइन माध्यम से 'हिंदी भाषा में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन' विषय पर एक वेबिनार आयोजित किया गया जिसमें डॉ राजीव रंजन प्रसाद, सहायक प्राध्यापक, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, अरूणाचल प्रदेश बतौर मुख्य वक्ता जबकि संस्थान के अधिकारी श्री दिनेश धीमान, निजी सचिव बतौर उप-वक्ता आमंत्रित थे ।

कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ एस.एस.सामंत, निदेशक के स्वागत संबोधन के साथ हुआ जिसमें सर्वप्रथम उन्होंने संस्थान के (ऑनलाइन व ऑफलाइन जुड़े हुए) सभी कर्मचारियों, अधिकारियों व शोधार्थियों का अभिवादन किया तदुपरांत उन्होंने समवेत स्वर में डॉ राजीव रंजन प्रसाद, प्राचार्य का ऑनलाइन जुड़ने पर स्वागत किया।

वेबिनार का अगला चरण बहुत महत्वपूर्ण था क्योंकि इस चरण में सभी कर्मचारियों/शोधार्थियों को हिंदी भाषा में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन से संबंधित आधारभूत जानकारियों से अवगत करवाना था । इस चरण में श्री दिनेश धीमान, निजी सचिव द्वारा सभी ऑनलाइन व ऑफलाइन जुड़े हुए सदस्यों को स्लाइड-शो के माध्यम से टिप्पण एवं प्रारूप लेखन की बारीकियों/सूक्ष्मताओं से अवगत करवाया गया ।

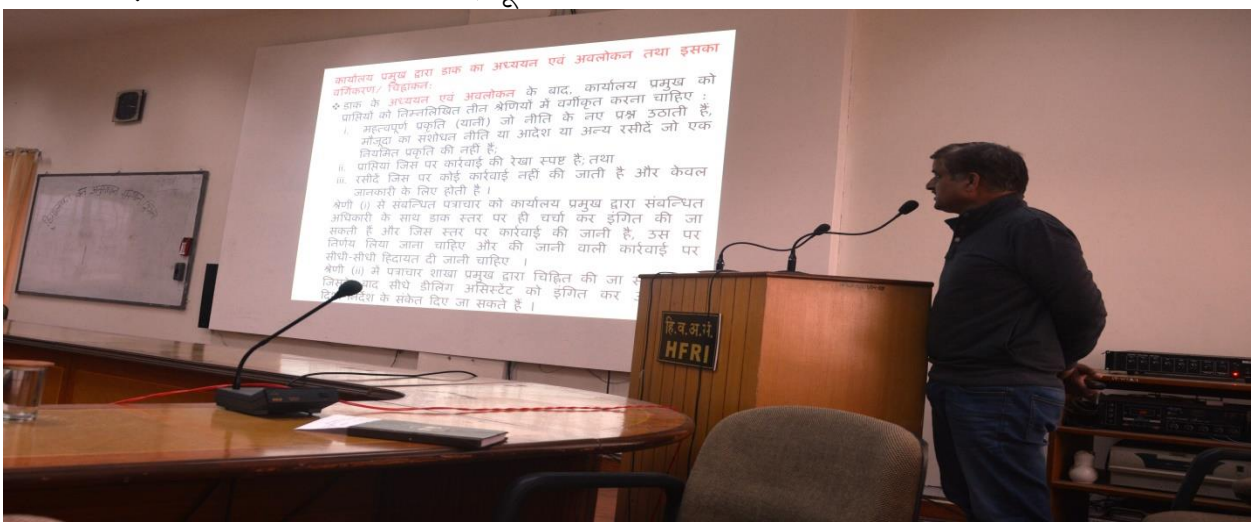

अपने संबोधन में श्री धीमान जी द्वारा 'टिप्पण व प्रारूप लेखन' को एक अविरल प्रक्रिया बताया जिसमें डीलिंग अस्टिेंट से लेकर सक्षमाधिकारी तक आने वाले विभिन्न चरणों को विस्तारपूर्वक समझाया गया ।

टिप्पण एवं प्रारूप लेखन से संबंधित ढांचागत जानकारियों के पारगमन के पश्चात वेबिनार के अगले अध्याय में अब समय था; 'टिप्पण एवं प्रारूप लेखन से संबद्ध प्रगतिशील पहलूओं' को आत्मसात करने का । इस चरण में मुख्या वक्ता डॉ राजीव रंजन प्रसाद, प्राचार्य द्वारा टिप्पण एवं प्रारूप लेखन का महत्व सपष्ट करते हुआ कहा गया कि नोटिंग में सधी हुई शब्दावली एवं सपष्टवादिता अति महत्वपूर्ण होती है । उन्होने कहा कि नोटिंग में सपूंर्ण पत्राचार की झलक परिलक्षित होनी चहिए क्योंकि अधिकांश सरकारी निर्णय टिप्पण एवं प्रारूप लेखन के आधार पर ही लिए जाते हैं ।

डॉ रंजन द्वारा इसके पश्चात दस्तावेजीकरण (Documentation) एवं पृष्ठांकन (Endorsement) के महत्व पर प्रकाश डालते हुए एक आदर्श टिप्पण एवं प्रारूप लेखन के सभी बुनियादी लक्षणों/विशेषताओं से संस्थान के कर्मचारियों को अवगत करवाया गया । अपने संबोधन के अंत में उन्होंनें संस्थान की राजभाषा के प्रति अटूट आस्था, वन संपदा संरक्षण के प्रति बचनबद्धता एवं संस्थान की आधिकारिक वेबसाइट पर अनुसंधान संबंधी अनन्य जानकारियों/सूचनाओं को दोनों भाषाओं (अंग्रेजी व हिंदी) में उपलब्ध करवाने हेतु हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला की भूरि-भूरि सराहना की ।

कार्यक्रम के अंत में निदेशक महोदय द्वारा राजभाषा गतिविधियों के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पर बल देते हुए मुख्य वक्ता डॉ राजीव रंजन एवं उप वक्ता श्री दिनेश धीमान जी के प्रति भाव-भीनी कृतज्ञता प्रकट की गई एवं सभी कर्मचारियों/शोधार्थियों का इस वेबिनार से ऑनलाइन जुड़ने के लिए आभार प्रकट किया गया । धन्यवाद संबोधन के अंतिम अंशों में माननीय निदेशक महोदय द्वारा हिंदी प्रकोष्ठ के तत्वावधान में किए जा रहे अप्रतिम प्रयासों की स्तुति की गई एवं प्रकोष्ठ को और अधिक अच्छा करने की प्रेरणा दी ।

सहायक निदेशक, राजभाषा
हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

-इति-

नोटः यह विवरण संस्थान की आधिकारिक वेबसाइट पर भी उपलब्ध है ।